Paper - Sem - VI

लार्ड लिटन

प्रश्न:- लार्ड लिटन के उपलब्धियों (आधारो पर) प्रकाश डालें या लिटन के नीतियों पर प्रकाश डालें।

उत्तर → लार्ड लिटन ब्रिटेन के प्रधानमंत्री डिजरेली की कन्जरवेटिव गवर्नमेन्ट द्वारा मध्य एशिया में घटनाओं पर विशेष ध्यान में रखते हुए मनोनीत किया गया था। अप्रैल 1876 में लिटन ने लार्ड नार्थ ब्रुक से अपना पद सम्भाला। लिटन स्वभाव से एक कूटनीतिज्ञ था। वह एक विख्यात कवि उपन्यासकार और निबन्ध लेखक था और साहित्य जगत में Owen Merchent ( ) के नाम से प्रसिद्ध था। 1876 तक प्रशासन का उसे कोई अनुभव नहीं था। आधुनिक काल में जितनी कड़ी आलोचना लिटन की हुई उतनी किसी अन्य वायसराय की नहीं हुई। उसकी राजनीति पूर्णरूप से असंगत थी। उसने भारतीय राजनीति में कई नवीन तथा सार्थक प्रयोग किये। वे समय से पूर्व होने के कारण असफल रहे। एक शासक के रूप में वह असफल रहा। उसकी दमनकारी नीति से भारतीय समाज में नई जागृति आई। ~~उसके प्रशासनीक सुधारों का हम निम्नलिखित में अध्ययन।~~

(1) लिटन और अबाध व्यापार →

प्रथम ब्रिटेन ~~प्रशासनीक~~ औद्योगिक क्रांति के दृष्टि से सम्पूर्ण ~~यूरोप~~ इस समय उद्योग और व्यापार और स्वतंत्र व्यापार की नीति संसार का नेतृत्व कर रहा था। ब्रिटेन को कच्चे माल ~~की प्राप्त~~ की आवश्यकता होती थी

(2)

और उसके बने हुये माल को स्वतंत्र बाजार प्राप्त हो जाय। अभी इस प्रकार भारत में स्वतंत्र बाजार की नीति अपनाना। ब्रिटेन के उद्योग और व्यापार के हित में थी। ब्रिटेन के व्यापारी भारत सरकार द्वारा लगाये गये विभिन्न आयात-निर्यात करों का विरोध कर रहे थे। अन्त में भारत-सचिव के आदेश और अपनी सम्मति से लार्ड लिटन ने स्वतंत्र व्यापार की नीति अपनायी और प्रायः 29 वस्तुओं से आयात-निर्यात कर समाप्त कर दिया। इन 29 वस्तुओं में चीनी, कपड़ा आदि थी। इस प्रकार भारतीय प्रशासन की आवश्यकताओं को अंग्रेजी राजनीति पर बलिदान कर दिया गया।

2) वित्तीय सुधार :- लार्ड मेयो के अधीन आरम्भ की गयी ~~[illegible]~~ वित्तीय विकेन्द्रीयकरण की नीति चलती रही तथा इस दिशा में एक और कदम बढ़ाया गया। प्रान्तीय सरकारों को साधारण प्रान्तीय सेवा के अधीन कर दिया गया। इन 19 हस्तांतरित सेवाओं के कार्य पालन के लिये प्रान्तीय सरकारों को निश्चित अनुदान नहीं दिया गया, अपितु उक्त सेवाओं के लिये उस प्रान्त के उसी विभाग की आय दे दी गयी और यह कहा गया कि यदि कोई धन बच जाय तो उसे केन्द्रीय सरकार के साथ आधा-आधा बाँट लिया जाये और यदि कम पड़ जाये तो केन्द्रीय सरकार आधा भार उठायेगी।

सर जान स्ट्रेची वायसराय की कार्यकारी परिषद के वित्तीय सदस्य थे, उन्होंने सभी प्रान्तों में नमक के कर की दर बराबर करने का प्रयत्न किया। उन्होंने भारतीय राजाओं के क्षतिपूर्ति के बदले नमक बनाने के अधिकार को छोड़ देने के लिये प्रेरित किया। नमक की अन्तर्राज्यीय तस्करी समाप्त हो गयी और सरकार को नमक से अधिक आय प्राप्त होने

Scanned with CamScanner

3) 1876-78 का अकाल → 1876 से 78 तक भारत में भीषण अकाल पड़ा। सबसे अधिक प्रभावित प्रदेश मद्रास, हैदराबाद, मध्य भारत आदि का कुछ भाग तथा पंजाब थे। अकाल का प्रभाव लगभग 2,50,000 वर्ग मील क्षेत्र 50 लाख लोगों पर पड़ा। बहुत से ग्राम उजड़ गये और कृषि के बहुत बड़े क्षेत्र में खेती नहीं हुई। रमेशचन्द्र दत्त का विश्वास है कि लगभग 50 लाख लोग एक वर्ष में भूख से मर गये। सरकार के पास अकाल से निपटने के लिये समुचित प्रबन्ध उचित नहीं थे। अकाल से पीड़ितों को कोई भी विशेष सहायता नहीं दी गयी। 1878 में रिचर्ड स्ट्रेची की अध्यक्षता में एक अकाल आयोग नियुक्त किया गया। प्रत्येक प्रान्त में अकाल निधि स्थापित करने का निश्चय किया गया। रचनात्मक कार्यक्रम के रूप में सिंचाई कार्य तथा रेलवे लाइन बनाने पर बल दिया गया। इस प्रकार सरकारी आने वाली अकाल-निधि का आधार निर्धारित किए गए।

4) राजा उपाधि अधिनियम :→ अंग्रेजी संसद ने एक राजा उपाधि अधिनियम पारित किया जिसमें महारानी विक्टोरिया को कैसरे-हिन्द की उपाधि से विभूषित किया गया। जनवरी 1877 में दिल्ली में एक वैभवशाली दरबार किया गया जिसमें राजाओं तथा जनता के सम्मुख इस उपाधि की घोषणा की गई। दुर्भाग्यवश यह उस समय किया गया जब देश में भीषण अकाल पड़ा हुआ था। सरकार ने झूठे आडम्बर और वैभव पर करोड़ों रुपया व्यय किया विशेष कर उस समय जब लोग भूखे मर रहे थे। राजा उपाधि अधिनियम तथा दिल्ली दरबार से एक राष्ट्रीय अपमान की गुप्त भावना सी जनता में फैल गई।

5) सरकारी सेवा के सम्बन्ध में अधिनियम :→ लार्ड लिटन के समय में सरकारी सेवाओं के सम्बन्ध में कुछ नियम बने। 1833 के कम्पनी के चार्टर द्वारा भारतीयों को बिना किसी भेदभाव के और केवल योग्यता के आधार पर बड़ी से बड़ी

कल्पना शक्ति थी। उसने एक पृथक उत्तर पश्चिमी प्रान्त बनाने की सोचा, केन्द्रीय सरकार के अधीन बनाने की योजना बनाई। इसकी अफगान नीति की भी निन्दा की। जब लोग अकाल से मर रहे थे, तब वह दिल्ली दरबार करने में व्यस्त था। उसकी योजनाएं कार्यान्वित नहीं हो सकी क्योंकि वे समय से पूर्व होने के कारण असफल रही। यह कहना उचित होगा कि लिटन एक शासक के रूप में असफल रहा। उसकी अप्रिय और दमनकारी नीति से भारत की जनता में भारी असंतोष फैल गया और भारतीय समाज में नयी जागृति आ गई।